भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका

सेवा संवाद

वर्ष-19 अंक-2 | वि. स. 2080 | युगाब्द 5125 | अप्रैल-2023 | वार्षिक चंदा 200/- | मूल्य प्रति - 20/-

मार्गदर्शक :

- डॉ कृष्णगोपाल
  संस्थापक न्यासी
- श्री ब्रह्मदेव शर्मा 'भाई जी'
  संस्थापक न्यासी
- श्री ओमप्रकाश गोयल
  अध्यक्ष
- श्री राहुल सिंह
  सचिव/प्रबंध न्यासी

सम्पादक :

- डॉ शिवभूषण त्रिपाठी

सह-सम्पादक :

- राजेश

मुद्रक एवं प्रकाशक :

- जितेन्द्र कुमार अग्रवाल

प्रबंधक :

- विजय अग्रवाल

केन्द्रीय कार्यालय :

भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सी-91, निराला नगर,
लखनऊ, उ.प्र.-226020
दूरभाष: 0522-4001837,
0522-2789406
मो: 9450020514
E-mail : bdsnyas@yahoo.co.in
web : www.bhaoraonyas.org

दिल्ली कार्यालय :

E-mail: bdsnyas.dl@gmail.com
मो : 9811068375

आलोकः प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं। प्रकाशक एवं सम्पादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सदस्यता शुल्क : 12 वर्षीय चंदा - रू 2000/- संरक्षक सहयोग राशि - रू 5000/-

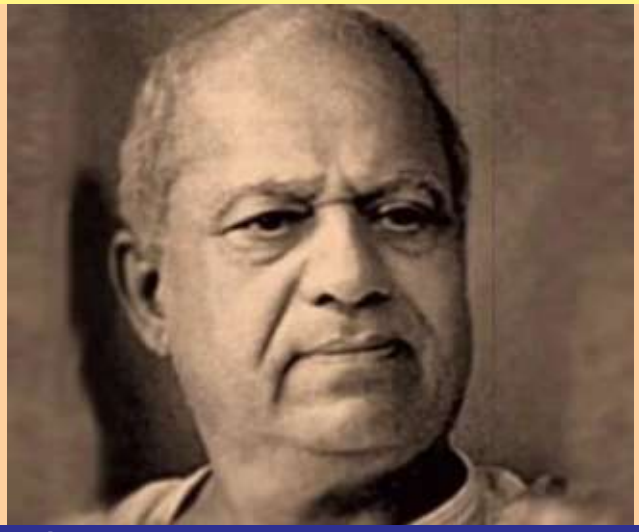

जन्म- 30 अप्रैल 1870 पुण्यतिथि - 16 फ़रवरी 1944

दादा साहेब फाल्के

कला फिल्म साहित्य में, जिसका नाम प्रसिद्ध।
सृजनशील व्यक्तित्व तुम, धुंडिराज गोविन्द।।
फिल्म जगत के पितामह, दादा साहेब नाम
ख्याति प्राप्त हे महापुरुष, तुमको नमन प्रणाम।।

- शिव

सेवा संवाद के संरक्षक एवं आजीवन सदस्य

आपकी पत्रिका सेवा संवाद अब डिजिटल रूप में प्रकाशित करने का निर्णय न्यास द्वारा किया गया है। आप सभी से अनुरोध है कि डिजिटल संस्करण आपको नियमित मिलता रहे, उसके लिए अपना मोबाइल नंबर और ई-मेल आईडी जल्द से जल्द न्यास के ई-मेल आईडी –bdsnyas.dl@gmail.com पर प्रेषित करें।

पाठकों की कलम से - इस कॉलम के लिए पत्रिका के विषय में या भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न प्रकल्पों से सम्बंधित आपके अनुभव व सुझाव आमंत्रित हैं। अपना नाम, पता और मोबाइल भी जरूर दें।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सहकार निवेदन

पिछले 29 वर्षों में न्यास के सेवा कार्यों में जो उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है, उसमें किसी न किसी रूप में आपका ही स्नेह सहयोग रहा है। न्यास के पास आर्थिक संसाधनों की बहुत कमी है। न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों का व्याप बढ़ाने के लिए न्यास के आय स्त्रोत को बढ़ाना होगा। न्यास द्वारा प्रस्थापित **कार्पस फण्ड** से प्राप्त होने वाली ब्याज राशि भी इस कार्य में प्रयुक्त होती है। अतः लक्ष्य तक पहुँचने हेतु कार्पस फण्ड भी बढ़ाना होगा। समाज सेवा के क्षेत्र में गौरव को बढ़ाने वाले इस महत कार्य में जन-जन का सहयोग एवं सहकार अपेक्षित है। आप सभी उदारमना सेवाभावी महानुभावों के सहकार से ही यह न्यास सेवारत है।

न्यास के सेवा कार्यों हेतु आप इस प्रकार से सहयोग कर सकते हैं-

1. **सचल चिकित्सा सेवा** - रु. 11,000 की मासिक धनराशि का सहयोग करके एक सेवा बस्ती में अपनी ओर से निःशुल्क चिकित्सा सुविधा एवं औषधि का वितरण कराना।
2. **नेत्र चिकित्सा सेवा** - रु. 5000 की धनराशि का सहयोग कर एक मोतियाबिन्द पीड़ित नेत्र रोगी का आपरेशन करवाकर उसे नेत्र ज्योति प्रदान कराना।
3. **विकलांग सहायता सेवा** - रु. 1,000 से 6,000 तक की राशि दे कर एक विकलांग बन्धु की सहायता में उसके लिए कृत्रिम अंग, उपकरण, बैसाखी, ट्राईसाइकिल, व्हील चेयर आदि की व्यवस्था कराना।
4. **कार्पस फण्ड (स्थायी निधि)-** रु. 10,000 से अधिक की धनराशि का अर्पण करके न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों में उत्प्रेरक बनना।
5. **छात्रवृत्ति-** न्यास द्वारा जरूरतमंद छात्रों को वार्षिक छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है जिसमें आपका सहयोग अपेक्षित है। कक्षा के अनुसार छात्रवृत्ति इस प्रकार है - प्राथमिक: रु 3000, माध्यमिक (जू.हा.): रु 5,000, हाईस्कूल: रु 7,000, इण्टरमीडिएट: रु 8000, आई.टी.आई/डिप्लोमा एवं स्नातक: रु 10,000, परास्नातक: रु 12,000, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु: रु 15,000, इंजीनियरिंग: रु 18,000 और मेडिकल: रु 20,000 वार्षिक।
6. **सेवा चेतना (अर्द्धवार्षिक पत्रिका)** - रु. 2,000 की आजीवन (10 वर्षीय) सदस्यता ग्रहण करके तथा पत्रिका की विज्ञापन दरों के आधार पर अपनी क्षमतानुसार विज्ञापन के रूप में सहयोग करके सहायता करना।
7. **सेवा संवाद (मासिक)** - रू. 2,000 की 12 वर्षीय एवं रु. 5,000 की संरक्षक सदस्यता ग्रहण करके सहयोग करना तथा पत्रिका की विज्ञापन दरों के आधार पर अपनी क्षमतानुसार विज्ञापन के रूप में सहयोग करके सहायता करना।।
8. **माधव सेवा आश्रम** - रु. 5,00,000 का दान कर, एक कक्ष के निर्माण के द्वारा अपने किसी सम्बन्धी की स्मृति को स्थायी बनायें।
9. **विश्राम सदन दिल्ली** - दिल्ली में एम्स के निकट न्यास द्वारा संचालित विश्राम सदन में प्रति बेड के लिए वार्षिक रु. 21,000 की कमी रहती है जिसके लिए सहायता राशि अपेक्षित है। आप एक या अधिक बेड के लिए राशि प्रेषित कर सकते हैं।
10. देवभूमि ऋषिकेश में प्रस्तावित **माधव सेवा विश्राम सदन** के भवन निर्माण हेतू अधिकाधिक सहयोग अपेक्षित है।
11. **अक्षय सेवा** - दिल्ली में एम्स एवं तीन अन्य अस्पतालों के निकट दोपहर में होने वाले भोजन वितरण के लिए रु. 6,000 (प्रतिदिन/प्रति अस्पताल) की सहायता राशि अपेक्षित है। आप एक या अधिक दिनों के लिए राशि प्रेषित कर सकते हैं।
12. **CSR फंड** - यदि आपकी फर्म CSR के अंतर्गत भी दान करती है तो कृपया न्यास से फोन या ईमेल द्वारा सम्पर्क करें।

न्यास को सेवा कार्यों के लिए दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। प्रत्येक दानदाता को अपना पता व पैन बताना अनिवार्य है। साथ ही आपसे अनुरोध है कि आप एक पत्र भी भेजें कि आप यह राशि न्यास को दान के रूप में दे रहे हैं। समाज के सेवा-कार्यों हेतु अनुरोध है कि न्यास को यथा सम्भव अधिकाधिक सहयोग करें।

दानराशि भेजने के विभिन्न माध्यम इस प्रकार हैं:

- चेक व ड्राफ्ट द्वारा जो, **भाऊराव देवरस सेवा न्यास** के पक्ष में **लखनऊ या दिल्ली** में देय हो, अपने पैन नं. व पते के साथ भेजें।
- अप्रवासी भारतीय भी FCRA के अन्तर्गत दान दे सकते हैं। उसके लिए फोन या मेल द्वारा सम्पर्क करें।
- दान की राशि आप सीधे न्यास के खाते में भी जमा कर पैन नं., फोन नं. व पते के साथ सूचित कर सकते हैं।
  - बैंक ऑफ इण्डिया, निराला नगर, लखनऊ - खाता सं. 6806100009948 (IFSC : SBIN0003813)
  - भारतीय स्टेट बैंक, डालीगंज, लखनऊ - खाता सं. 30448433657 (IFSC : SBIN0003813)
  - भारतीय स्टेट बैंक, सफदरजंग एंक्लेव, नई दिल्ली - खाता सं. 41171580896 (IFSC : SBIN0013182)

आशा है सेवा के इस पुनीत कार्य में आप सभी अवश्य सहभागी बनेंगे।

अपनी बात

हमें अपने विचारों को नेक, पवित्र और व्यापक बनाये रखने के लिए अपने विचारों पर सतत् दृष्टि रखने की आवश्यकता है क्योंकि हमारे विचार ही शब्द का रूप ग्रहण कर कार्यरूप में परिणत होते हैं। कार्यों से आदतों का और फिर चरित्र का निर्माण होता है। अस्तु जीवन में विचारों का महत्त्वपूर्ण स्थान है, तभी तो वैदिक ऋषि भी सद्विचारों की कामना करते हुए कहते हैं - **'तन्मेमनः शिव संकल्पमस्तु'**, अर्थात् हमारे मन में कल्याणकारी संकल्प-विचार उत्पन्न हों।

सद्विचारों के अभाव में हमारा जीवन घोर नारकीय, दुःखद और रोगग्रस्त हो जाता है। आयुर्वेद शास्त्र में तो इस विषय में विस्तृत चर्चा है। जाने अनजाने, ईर्ष्या, द्वेष अथवा अपने स्वार्थ के अनुरूप आचरण पर, अथवा किन्हीं पूर्वाग्रहों से ग्रसित होने के कारण हम किसी के प्रति अपने मन में कुविचारों को पाल लेते हैं। फलस्वरूप दूसरे का कुछ बिगड़े या न बिगड़े परन्तु अपना तो बिगाड़ उसी क्षण प्रारम्भ हो जाता है और यदि विचारों में शीघ्र परिवर्तन न हुआ तो हम भय, अवसाद, रक्तचाप, कैन्सर आदि न जाने किन-किन रोगों से युक्त हो जाते हैं। इसीलिए कुविचारों के त्याग और सद्विचारों के ग्रहण की बात कही जाती है।

समाज जीवन में कार्य करते हुए हमें अपनी सेवा भावना में कभी कोई त्रुटि नहीं आने देना है। कदाचित् कभी कोई सद् मार्ग से स्खलित हो जाय तो उसे सदा के लिए बुरा मानकर उसका परित्याग उचित नहीं रहता अपितु उसे स्नेह, प्रेम और आदर देकर ऊपर उठाने की चेष्टा और सतत् प्रयास करना ही श्रेयस्कर है। **हमारे विचार ही हमारे व्यक्तित्व को बनाते हैं और हमारी मानसिक अवस्था ही हमारे भाग्य का निर्णय करती है**। दुनिया में जितने भी लोग प्रसिद्ध हुए हैं उनके जीवन के मूल में सद्विचार ही प्रमुख कारण रहे हैं। वे कभी अपनी छोटी सी छोटी भूल को भी स्वीकार करने में देर नहीं लगाते और मिथ्या, अभिमान व भ्रम कभी नहीं पालते। ऐसे ही सद्गुणों से युक्त सरल, उदार किसी का कथन है - "यदि हम सम्यक् विचारों का संकलन कर सकें तो हम अपनी सभी समस्याएँ, रोग, दोष आदि सभी कुछ स्वयं ठीक कर सकते हैं।" अस्तु हमें सकारात्मक सोच के साथ अभावों में रोने की दीन हीन आदत छोड़कर सदैव प्रसन्न रहने का अभ्यास करना ही चाहिए, क्योंकि साहस और उत्साह के पंख से हम सफलता की उड़ान भर सकते हैं। अस्तु यदि हम सद्विचारों के महत्त्व को स्वीकारते हुए- **'आ नो भद्राः क्रतवोयन्तु विश्वतः'**, अर्थात्, कल्याणकारी अच्छे विचारों को चारों ओर से आने दें। वेद के इस एक वाक्य पर ध्यान देकर और इसके अनुसार आचरण कर सकें, तो सेवा के कार्य में हमें नित्य आनन्द की अनुभूति होती रहेगी और जीवन स्वर्ग बन जायेगा। इन्हीं सद्भावनाओं के साथ यह अंक आप को समर्पित है।

@ शिव

धुंडिराज गोविन्द फालके उपाख्य दादासाहब फालके को भारतीय फिल्म उद्योग का 'पितामह' कहा जाता है। आप सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट से प्रशिक्षित सृजनशील कलाकार थे। वह मंच के अनुभवी अभिनेता थे और शौकिया जादूगर थे। आपने कला भवन बड़ौदा से फोटोग्राफी का एक पाठ्यक्रम भी किया था। धुंडिराज फाल्के ने सिनेमा की दुनिया में उस वक्त कदम रखा जब भारत में सिनेमा का कोई अस्तित्व ही नहीं था। दादा साहेब ने ही फिल्मों को जीवन दिया और नई पहचान भी। **दादा साहब फाल्के अवार्ड** को भारतीय सिनेमा का सबसे प्रतिष्ठित अवॉर्ड माना जाता है।

भाऊराव देवरस स्मृति सेवा सम्मान

भाऊराव देवरस स्मृति सेवा सम्मान (2022-23) का आयोजन

न्यास द्वारा प्रतिवर्ष देश भर से चुनकर दो सेवाव्रतियों को भाऊराव देवरस स्मृति सेवा सम्मान से सम्मानित किया जाता है। कुल 54 सेवाव्रतियों का सम्मान पिछले वर्ष तक किया जा चुका है। वर्तमान वर्ष 2022-23 के लिए सेवा सम्मान का आयोजन 18 मार्च, शनिवार को हापुड़ के स्वस्ति सभागार, श्रीमती ब्रह्मादेवी सरस्वती बालिका विद्या मंदिर में आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में सौभाग्य से संघ के मा. अखिल भारतीय सेवा प्रमुख श्री पराग अभ्यंकर जी मुख्य वक्ता के नाते से उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे भारत सरकार के मंत्री और गाजियाबाद से सांसद जनरल वी के सिंह जी। हापुड़-मेरठ लोकसभा क्षेत्र के सांसद श्री राजेन्द्र अग्रवाल जी कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि के नाते से उपस्थित थे। कार्यक्रम की स्वागत समिति के अध्यक्ष के रूप में श्री विकास खन्ना जी उपस्थित थे। मंच संचालन विद्यालय की संचालिका श्रीमती स्वाति गर्ग जी द्वारा किया गया।

सर्वप्रथम दीप प्रज्जवलन के पश्चात मंचासीन अतिथियों का परिचय कार्यक्रम के संयोजक श्री अनिल अग्रवाल जी ने कराया जिसके बाद सभी अतिथियों को पुष्प गुच्छ व न्यास का प्रतीक चिन्ह देकर उनका सम्मान किया गया। इसके बाद न्यास की गतिविधियों की जानकारी एक वीडियो के माध्यम से सबके बीच रखी गई। तत्पश्चात स्वागताध्यक्ष श्री विकास खन्ना जी ने सभी अतिथियों का स्वागत किया।

मंचस्थ अतिथियों और न्यास के कोषाध्यक्ष श्री रामअवतार किला जी ने दोनों सेवाव्रतियों को शाल,

श्रीफल के साथ 2.5 लाख का चेक प्रदान करते हुए उन्हें भाऊराव देवरस स्मृति सेवा सम्मान से सम्मानित किया। सेवाव्रतियों में गुवाहाटी से आत्मनिर्भर एक चैलेन्ज और नागपुर से श्रीकृष्ण शान्तिनिकेतन का चयन सेवा सम्मान हेतु किया गया था। आत्मनिर्भर एक चैलेन्ज गुवाहाटी से श्री अशोक कुमार झा और श्रीकृष्ण शान्तिनिकेतन नागपुर से श्रीमती प्रज्ञा प्रमोद राऊत जी सेवा सम्मान हेतु उपस्थित थे। डॉ सौरभ द्वारा श्री अशोक झा का और श्रीमती सुशीला किला जी द्वारा श्रीमती प्रज्ञा जी के अभिनन्दन पत्र का वाचन हुआ। अभिनन्दन पत्र के पाठन के पश्चात उन दोनों ने अपनी-अपनी संस्था द्वारा दिव्यांगों को आत्मनिर्भर बनाने हेतु किए जा रहे सेवा कार्यों की विस्तार से जानकारी दी जिससे उपस्थित जनसमूह अत्यंत उत्साहित हुआ।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता मा. पराग अभ्यंकर जी ने अपने सारगर्भित भाषण में सेवा कार्यों की महत्ता पर हमारा मार्गदर्शन किया। उन्होंने बताया कि कैसे सेवा के संस्कार अगली पीढ़ी में बीजारोपित किए जाते हैं और कैसे हमारे परिवार में हमारे धर्म व हमारे सांस्कृतिक दर्शन में सेवा को प्रमुखता से दर्शाया गया है। उन्होंने कहा कि इन दोनों सम्मानित सेवाव्रतियों से हम सभी को प्रेरणा मिलेगी।

न्यास की सेवा सम्मान चयन समिति के दो सदस्य, मा. संध्या टिपरे जी और श्री सुरेश जी कुलकर्णी कार्यक्रम में उपस्थित थे। विद्यालय में अध्ययनरत पूर्वांचल और वनवासी क्षेत्रों की छात्राओं ने मनमोहक गीत प्रस्तुत किए। श्री संजय गर्ग जी और श्रीमती स्वाति गर्ग जी के निर्देशन में विद्यालय के सभी पदाधिकारियों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अनथक मेहनत की। कार्यक्रम में न्यास के विभिन्न प्रकल्पों को दर्शाती एक प्रदर्शनी भी लगाई गई थी। कार्यक्रम में कुल उपस्थिति लगभग 550 रही।

कार्यक्रम में न्यास के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश गोयल जी मंच पर कार्यक्रम के अध्यक्ष के नाते से उपस्थित थे। न्यास के संस्थापक न्यासी व ऋषिकेश प्रकल्प प्रमुख श्री संजय गर्ग जी भी कार्यक्रम में अत्यंत सक्रिय भूमिका में उपस्थित थे। न्यासी श्री सुधीर मोहन मित्तल जी ने सपत्नीक कार्यक्रम में भाग लिया। न्यास से जुड़े अनेक कार्यकर्ताओं, जैसे श्री राजीव गुगलानी, श्री उमेश गोयल, श्री मयंक गोयल, श्री विपिन त्यागी आदि ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अपना सहयोग दिया। श्री अनिल अग्रवाल जी ने कार्यक्रम का सफल संयोजन किया।

कार्यक्रम के अंत में न्यास के सचिव श्री राहुल सिंह जी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन हुआ। राष्ट्रगीत वन्दे मातरम् के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

सामाजिक सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु भाऊराव देवरस सेवा-सम्मान 2022-23 से सम्मानित होने वाले सेवाव्रती महानुभाव

आत्मनिर्भर - एक चैलेंज, गुवाहाटी

एक विश्वप्रसिद्ध चाय कंपनी के प्रबंध निदेशक **श्री कौशिक दास जी** द्वारा 1996 में गुवाहाटी में अवस्थित संस्था ' आत्मनिर्भर – एक चैलेंज' दिव्यांगों में स्वयं पर भरोसा जगाने के उद्देश्य से उनके पुनर्वास और अधिकारिता की परियोजना पर काम करती है। दिव्यांग और साधारण के बीच की असमानता को दूर करना इसका लक्ष्य है। वर्तमान में इस संस्था द्वारा 50 परिवारों के भरण पोषण, उपचार और बच्चों की शिक्षा आदि का प्रबंध किया जा रहा है। कार्य के रूप में चाय और खाद्य अनाज की पैकेजिंग करने के साथ साथ पेपर बैग, गमला, पौधा रोपण आदि का काम भी दिव्यांगों द्वारा किया जाता है और इस कार्य से मिलने वाली राशि को इन सभी पर व्यय कर दिया जाता है। समय समय पर गृह-कार्य में उपयोग में आने वाली वस्तु और खाद्यपदार्थों के वितरण का कार्य भी इन्हें दिया जाता है। आत्मनिर्भर – एक चैलेंज को पूर्व में राष्ट्रपति पुरस्कार, हेलेन कीलर पुरस्कार, संत ज्ञानेश्वर पुरस्कार आदि से सम्मानित किया जा चुका है। 2013 में श्री कौशिक दास जी के देहांत के उपरान्त सभी न्यासी मिलकर इस संस्था को चला रहे हैं। संस्था के वर्तमान प्रबंधक श्री अशोक झा पिछले 9 वर्षों से इस संस्था से जुड़े हैं। इस संस्था में आपका प्रमुख योगदान इस संस्था के कार्यकलाप, वित्त, सामाजिक, प्रशासनिक और खाता संबंधी सभी कार्यों की सुव्यवस्था करना है। आप ही संस्था की ओर से सेवा सम्मान ग्रहण करेंगे।

डॉ प्रज्ञा प्रमोद राऊत, श्रीकृष्ण शान्तिनिकेतन, नागपुर

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज से प्रेरित श्रीकृष्ण शांतिनिकेतन 2004 से मतिमंद, मनोरुग्ण, अंध, अपंग, कुष्ठरोगी, मरणासन्न आदि लोगों का विना-अनुदानित निशुल्क निवासी केंद्र चला रहा है। डॉ प्रमोद राउत द्वारा स्थापित इस केंद्र का संचालन उनकी पत्नी डॉ प्रज्ञा राऊत द्वारा किया जा रहा है। डॉ प्रज्ञा ने कवि कुलगुरु कालिदास विश्वविद्यालय, रामटेक, नागपुर से योग-नेचुरोपैथी और डायटेटिक्स में डिप्लोमा (DYND) किया है। इन मनोरोगियों के पुनर्वसन, उनमें जीने की उम्मीद जगाने के साथ साथ कार्य-दक्ष बनाने का काम ही राऊत दंपत्ति का जीवन-ध्येय बन गया है। आत्मनिर्भर बनाने हेतु मनोरोगियों को कागज़ की थैलियाँ बनाना, दोने बनाना, उनकी पैकिंग करना, सिलाई आदि साधारण कुशलता और कम मेहनत के काम कराए जाते हैं। मनोरोगियों के साथ साथ असहाय महिलाओं को भी इस आश्रम में स्थान मिलता है। इस संस्थान में प्रतिवर्ष लगभग 20 महिलाएँ लाभान्वित होती हैं जिनमें से अनेकों महिलाएँ आत्मनिर्भर बनकर अपना जीवन-यापन कर रही हैं। बेलतरोडी नागपुर और आर्वी में सफलता पूर्वक केंद्र चलाने के बाद अब एक और केंद्र अमरावती शहर में प्रारम्भ करने की संस्थान की योजना है।

माधव सेवा विश्राम सदन, ऋषिकेश

मार्च मास में होली के उत्सव के कारण अधिकतर श्रमिक अपने घर चले गए थे जिस कारण काम की प्रगति कम हुई थी। वर्षा ने भी काम की प्रगति को बाधित किया। धीरे-धीरे कार्य की प्रगति अपने पूर्व रूप में आ रही है। दूसरे तल के शेष भाग की छत का काम शीघ्र ही पूरा होगा। अप्रैल मास में सभी प्रमुख कार्यकर्ताओं व दानदाताओं का ऋषिकेश में मिलन का एक कार्यक्रम तय किया जाएगा।

आपका सहकार

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा संघ के द्वितीय सरसंघचालक परमपूजनीय माधव राव जी गोलवलकर की स्मृति में देवभूमि ऋषिकेश में एम्स अस्पताल के निकट माधव सेवा विश्राम सदन का निर्माण कार्य प्रगति पर है। इस सदन का उपयोग साधु संतों, एम्स ऋषिकेश में उपचार के लिए आने वाले रोगियों व उनके सहायकों द्वारा किया जाएगा। यह कार्य आपका अपना ही है, इसे अनुभव करते हुए आपसे विनम्र अनुरोध है कि आप उदार हृदय से इस सेवा प्रकल्प हेतु यथा संभव सहयोग करें। आपके द्वारा दी गई राशि 80-G के अंतर्गत छूट प्राप्त है। आप CSR फंड के अंतर्गत भी सहयोग कर सकते हैं। आपका यही सहयोग निर्मित होने वाले इस विश्राम सदन के शीघ्रातिशीघ्र साकार रूप लेने में सहायक होगा।

आपके परिवार में सुख-समृद्धि के लिए शुभकामनाएं।

भारतीय स्टेट बैंक, केंद्रीय सचिवालय, नई दिल्ली

A/C: 40692412361
IFSC : SBIN0000625

आर्थिक सहयोग के लिए आवश्यक जानकारी :

MCA में न्यास की CSR पंजीकरण संख्या **CSR00004454**
80G में न्यास की पंजीकरण संख्या **AAATB1049GF20217**
न्यास की FCRA पंजीकरण संख्या **136550134**

स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प

लखनऊ और उसके आस-पास की सेवा बस्तियों में स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से यह प्रकल्प प्रारम्भ किया गया था। न्यूनतम शुल्क के साथ चिकित्सीय सुविधा के साथ निशुल्क दवा का वितरण किया जाता है। लखनऊ के आस-पास स्थित बस्तियों में सप्ताह के दिनों के अनुसार अलग-अलग बस्तियों में मेडिकल वैन के माध्यम से चिकित्सक व सहायक दवाओं के साथ जाते हैं। लखनऊ में शहरी क्षेत्र में भी एलोपैथी व होमियोपैथिक चिकित्सकों द्वारा सेवाएं दी जाती हैं।

दिनांक 21 मार्च को C-91, निराला नगर, लखनऊ में स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प की बैठक भाऊराव देवरस सेवा न्यास के न्यासी एवं सह-सचिव श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल जी की अध्यक्षता में संपन्न हुई। इस अवसर पर स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प के प्रभारी श्री ओमप्रकाश श्रीवास्तव तथा प्रकल्प में सेवा देने वाले चिकित्सक बंधु डॉ वी के मिश्रा, डॉ राजकुमार अग्रवाल, डॉ राजेश चंद सक्सेना, डॉ सुधीर श्रीवास्तव, डॉ विशाल केसरवानी और डॉ कृष्णाशंकर श्रीवास्तव भी उपस्थित रहे। स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों की समीक्षा तथा चिकित्सीय कार्य को और आगे बढ़ाने पर भी विचार किया गया। प्रमुख रूप से एक नए केंद्र को प्रारम्भ करने की योजना बनी। रूग्ण सेवा केंद्र, निराला नगर में A.C. लगाने पर विचार हुआ। दवाओं की कमी के विषय में चिकित्सकों ने विषय उठाया जिसकी व्यवस्था का आश्वासन सह-सचिव और प्रकल्प के संयोजक की ओर से दिया गया। होम्योपैथ में रोगियों की संख्या में आ रही कमी और उसे बढ़ाने के उपाय करने पर भी विचार हुआ।

राष्ट्रीय सेवा संगम, जयपुर

राष्ट्रीय सेवा भारती की अगुवाई में सेवा के महाकुंभ राष्ट्रीय सेवा संगम-2023 का आयोजन जयपुर में 7 से 9 अप्रैल 2023 को होगा। इस संगम का मुख्य विषय है स्वावलंबन। अतः न्यास की ओर से स्वावलंबन का कार्य कर रहे समर्थ भारत प्रकल्प के दो कार्यकर्ता भी इसमें अपनी प्रदर्शनी लगाने और सेवा संगम में भाग लेने के लिए जाएंगें।

सेवा के इस महाकुम्भ में देशभर में संघ की योजना से या संघ से सम्बंधित संगठनों द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों से जुड़े कार्यकर्ता आएँगें। पूजनीय सरसंघचालक जी एवं मा. सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय जी इस सेवा संगम में पूरा समय रहेंगे। अगले अंक में इस सेवा संगम की विस्तृत जानकारी मिल सकेगी।

समर्थ भारत - दिल्ली

दिल्ली में विभिन्न स्थानों पर युवाओं को अलग-अलग विधाओं का प्रशिक्षण देकर उन्हें स्वावलंबी बनाने का कार्य समर्थ भारत द्वारा पिछले 2 वर्षों से किया जा रहा है। इसके माध्यम से सैकड़ों युवा लाभान्वित हो चुके हैं और उनमें से अनेकों ने अपना स्व-रोजगार भी प्रारम्भ किया है। फ़रवरी मास में समर्थ भारत में विभिन्न केन्द्रों की गतिविधियों की जानकारी नीचे दी गई है।

दक्षिणी दिल्ली के नेब सराय में नाईयों के साथ बैठक – दिनांक 14 मार्च को दक्षिणी दिल्ली के नेब सराय में सैलून वाले भाईओं की बैठक सम्पन्न हुई। इस बैठक में दक्षिणी दिल्ली के 10 सैलून मालिकों ने भाग लिया। समर्थ भारत के श्री राकेश जी और श्री सुशील जी की अध्यक्षता में कई विषयों पर चर्चा हुई। इस बैठक में उनके काम की जानकारी ली गई। सभी को इस प्रशिक्षण के लाभ बताए गये और उनसे कुछ नया काम सीखने के लिये सुझाव भी माँगे गए। आए हुए नाईयों में से कुछ भाई नया काम सीखने को तैयार हो गए। बैठक के बाद जलपान की व्यवस्था भी रखी गई थी।

आई.एन.ए. प्रशिक्षण केंद्र गतिविधियाँ – ब्यूटिशियन कोर्स - इस केंद्र पर ब्यूटिशियन के पहले बैच का तीन माह का प्रशिक्षण दिनांक 16 जनवरी से विधिवत प्रारंभ हुआ। इस बैच में 21 प्रशिक्षार्थी सुश्री अंजली जी के द्वारा प्रशिक्षण ले रहे हैं। प्रशिक्षण पूर्ण होने के उपरांत सभी को KVIC के द्वारा प्रमाणपत्र भी दिया जायेगा। इस माह के प्रशिक्षण में निम्न विषय कवर किये गए हैं – मेकअप अभ्यास, स्पार्कल मेकअप, लाइट मेकअप, बॉडी पोलिशिंग, आँखों का मेकअप, हेयर स्टाइल, शिवजी और सतीमाता मेकअप, आदि।

आई.एन.ए. प्रशिक्षण केंद्र गतिविधियाँ - ए.सी. और रेफ्रीजिरेटर कोर्स - इस केंद्र पर ए.सी. और रेफ्रीजिरेटर के पहले बैच का एक माह का प्रशिक्षण दिनांक 20 मार्च को प्रारंभ हुआ। इस बैच में 17 प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण ले रहे हैं। प्रशिक्षण श्री संजीव जी के द्वारा दिया जा रहा है। प्रशिक्षण पूर्ण होने के उपरांत सभी को KVIC के द्वारा प्रमाणपत्र भी दिया जायेगा। इस माह में प्रारम्भिक जानकारी दी गई।

त्रिलोकपुरी ब्लाक 36 प्रशिक्षण केंद्र गतिविधियाँ – ए.सी. और रेफ्रीजिरेटर कोर्स - इस केंद्र पर ए.सी. और रेफ्रीजिरेटर के पहले बैच का एक माह का प्रशिक्षण 5 मार्च को पूर्ण हुआ। इस बैच में 12 प्रशिक्षार्थियों ने श्री संजीव जी के द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त किया। शीघ्र ही सभी को KVIC के द्वारा प्रमाणपत्र भी दिया जायेगा।

संगम विहार, सैनिक फार्म केंद्र गतिविधियाँ – जी.एस.टी. और टैली कोर्स - इस केंद्र पर जी.एस.टी. और टैली कोर्स के द्वितीय बैच का प्रशिक्षण दिनांक 10 जनवरी को ट्रायल कक्षा के साथ प्रारंभ हुआ था। इस बैच में मार्च माह के अंत तक 15 प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण ले रहे थे। प्रशिक्षण सुश्री रीना प्रजापति जी के द्वारा दिया गया।

प्रशिक्षण पूर्ण होने के उपरांत इनका NSDC के द्वारा असिसमेंट लिया जायेगा और उसमें पास होने वाले सभी प्रशिक्षार्थियो को NSDC का प्रमाणपत्र भी दिया जायेगा। प्रशिक्षण के दौरान फीडबैक भी लिया गया जिससे कि प्रशिक्षण में होने वाली कमियों को जानकर उनमें सुधार करके और बेहतर किया जा सके।

त्रिलोकपुरी एक्स्ट्रा ब्लाक 3 1 प्रशिक्षण केंद्र गतिविधियाँ – सिलाई कोर्स - इस केंद्र पर महिलाओं के लिए सिलाई का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। यह प्रशिक्षण तीन माह की अवधि का है। 25 मार्च को भारत विकास परिषद् द्वारा नव वर्ष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महिलाओं को रोजगार देने के उद्देश्य से त्रिलोक पुरी केंद्र (महिला स्वावलम्बन केन्द्र) पर प्रशिक्षार्थियों द्वारा बनाए गए थैलों को प्रदर्शित और विक्रय के लिए लगाया गया। सभी आगंतुकों ने थैलों को पसन्द किया और खरीदा भी जिस कारण सभी थैलों की बिक्री हो गई।

महामना शिक्षण संस्थान

महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प, लखनऊ

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा संचालित महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प के तृतीय बैच की छात्राओं की वार्षिक परीक्षा सफलता पूर्वक सम्पन्न हुई। द्वितीय बैच की छात्राओं की भी पूर्व की भांति आनलाइन पढ़ाई चल रही है। द्वितीय बैच की छात्राएं बोर्ड परीक्षाओं की तैयारी में व्यस्त हैं। छात्रावास में रहने वाली बालिकाएं पढ़ाई के साथ-साथ अन्य गतिविधियों में भी भाग लें इस उद्देश्य से कुछ विशेष दिवसों पर कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। परीक्षाओं को ध्यान में रखते हुए इन कार्यक्रमों को सूक्ष्म ही रखा गया। दिनांक 1 मार्च को कविता दिवस पर कविता पाठ हुआ। 7-8 मार्च को बालिकाओं का होली का अवकाश रहा। बालिकाओं ने रंजना जी एवं वार्डन पूनम जी के संरक्षण में उत्सव का आनंद लिया। 8 मार्च को ही महिला दिवस के अवसर पर सामूहिक गायन का आयोजन हुआ। 22 मार्च को हिन्दू नव वर्ष के अवसर पर भारत माता का पूजन तथा नवरात्र पूजन एवं आरती हुई। इसी क्रम में दिनांक 30 मार्च को श्री राम नवमी के शुभ अवसर पर श्री राम चरित मानस का सामूहिक पाठ हुआ। प्रकल्प की बालिकाओं के सर्वांगीण विकास को प्रेरित करने को न्यास प्रयत्नशील है।

आगामी 16 अप्रैल को इस प्रकल्प के लिए बनने वाले भवन का नींव पूजन का कार्यक्रम रहेगा।

अक्षय सेवा प्रकल्प - दिल्ली

न्यास की योजना से अक्षय सेवा प्रकल्प के माध्यम से दिल्ली में 3 अस्पतालों के निकट पिछले लगभग 6 वर्षों से जरूरतमंदों को दोपहर के भोजन का वितरण किया जा रहा था जिसमें एक चौथा केंद्र इस वर्ष मकर संक्रांति के शुभ अवसर पर शुरू हुआ है। इस प्रकार अब इन 4 केन्द्रों द्वारा 2000 से 2500 लोगों को प्रतिदिन भोजन कराने में न्यास सफल हो रहा है।

इस मास में अक्षय सेवा प्रकल्प को प्रारम्भ हुए छः वर्ष पूर्ण हो जाएंगे। इस अवसर पर एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन करने की प्रकल्प की योजना है।

समय समय पर अनेक महानुभाव अपने हाथों से भोजन वितरण करने का पुण्य कमाने इन केन्द्रों पर आते रहते हैं। उसी कड़ी में 3 मार्च को एम्स के निकट भोजन वितरण के लिए दिल्ली के प्रसिद्ध कार्डियोलोजिस्ट डॉ एस एन अग्रवाल का आना हुआ। डॉ अग्रवाल दिल्ली के प्रसिद्ध एस्कॉर्ट्स हार्ट इंस्टिट्यूट में कार्यरत हैं और चिकित्सा के साथ साथ समाज सेवा से जुड़े कार्यों में भी रुचि लेते हैं। इनके साथ न्यास के कोषाध्यक्ष और इस प्रकल्प के संयोजक श्री रामअवतार किला जी और उनकी पत्नी श्रीमती सुशीला किला जी भी उपस्थित थीं।

डॉ अग्रवाल सरीखे वरिष्ठ चिकित्सक और समाज सेवी बंधुओं का आगमन इस पुनीत कार्य को और आगे बढ़ाने के लिए उत्प्रेरक का काम करता है। इसी कारण से हम 50 लाख के आंकड़े को पार करने में सफल हुए हैं।

अक्षय सेवा प्रकल्प और भाऊराव देवरस सेवा न्यास के कार्यकर्ता डॉ एस एन अग्रवाल जी का हार्दिक धन्यवाद करते हैं और आशा करते हैं कि उनका आशीर्वाद और शुभकामनाएं न्यास को भविष्य में भी मिलते रहेंगे।

इस प्रकल्प से प्रेरणा लेकर देश भर में कई स्थानों पर ऐसी व्यवस्था विभिन्न संगठनों द्वारा प्रारम्भ की गई है जिसके लिए हम उनका हृदय से धन्यवाद करते हैं।

पिलावुळ्ळकण्टि तेक्केपरम्पिल् उषा (पी° टी° उषा), भारत के केरल राज्य की एथलीट हैं। "भारतीय ट्रैक और फ़ील्ड की रानी" मानी जानी वाली पी° टी° उषा भारतीय खेलकूद में 1979 से हैं। वे भारत के अब तक के सबसे अच्छे खिलाड़ियों में से एक हैं। उन्हें "पय्योली एक्स्प्रेस" नामक उपनाम भी दिया गया है ।

पावन स्मृति - अप्रैल

पुण्य भूमि भारत में जन्म लेकर जिन्होंने जीवन पर्यन्त मानव की सेवा की और मानवता की रक्षा में अपना सर्वस्य समर्पित कर कीर्तिमान स्थापित किया,अपने बहुआयामी कार्यों द्वारा जीवन के विविध क्षेत्रों में आलोक स्तम्भ बनकर हमारा मार्गदर्शन किया तथा जो आज भी हमारे प्रेरणा स्त्रोत हैं ऐसे उन सभी दिव्य महापुरूषों की पावन स्मृति में श्रद्धा सुमन समर्पित हैं।

दिनांक	दिवस	महापुरूषों का नाम
1 अप्रैल 1889	जन्मदिवस	संघ संस्थापक : डा. केशवराव बलिराम हेडगेवार
2 अप्रैल 1933	पुण्य तिथि	भारतीय क्रिकेट के नायक : जामनगर के महाराजा रणजीत सिंह
2 अप्रैल 1960	पुण्य तिथि	क्रांति और सेवा के राही : जोगेश चन्द्र चटर्जी
3 अप्रैल 1916	जन्मदिवस	संस्कृत प्रेरणा पुरुष : लालचन्द प्रार्थी
4 अप्रैल 1889	जन्मदिवस	राष्ट्रकवि माखनलाल चतुर्वेदी
8 अप्रैल 1857	बलिदान दिवस	मंगल पाण्डे का बलिदान
9 अप्रैल 1893	जन्मदिवस	घुमक्कड़ साहित्यकार राहुल सांस्कृत्यायन
10 अप्रैल 1875	स्थापना दिवस	आर्य समाज की स्थापना
11 अप्रैल 1858	बलिदान दिवस	वीर खाज्या एवं दौलतसिंह नायक
13 अप्रैल 1851	जन्मदिवस	कृषि वैज्ञानिक सर गंगाराम
13 अप्रैल 1919	इतिहास स्मृति	अनुपम क्रांतितीर्थ : जलियाँवाला बाग
14 अप्रैल 1891	जन्मदिवस	संविधान के निर्माता : डा. अम्बेडकर
14 अप्रैल 1950	पुण्य तिथि	प्रेम के उपासक : रमण महर्षि
17 अप्रैल 1859	बलिदान दिवस	अमर बलिदानी : तात्याटोपे
18 अप्रैल 1898	बलिदान दिवस	अमर बलिदान : दामोदर हरि चाफेकर
18 अप्रैल 1948	पुण्य तिथि	बंगाल में राष्ट्रीय शिक्षा के प्रसारक सतीशचन्द्र मुखोपाध्याय
19 अप्रैल 1864	जन्मदिवस	तपस्वी शिक्षाविद : महात्मा हंसराज
19 अप्रैल 1910	बलिदान दिवस	युवा बलिदानी : अनंत कान्हेरे
21 अप्रैल 1858	बलिदान दिवस	गणपतराय का बलिदान
23 अप्रैल 1858	जन्मदिवस	विद्वत्ता की प्रतिमूर्ति पण्डिता रमाबाई
26 अप्रैल 1864	जन्मदिवस	डी.ए.वी. कालेज के सूत्रधार : पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी
28 अप्रैल 1858	बलिदान दिवस	क्रांति पुरोधा : जोधासिंह अटेया
29 अप्रैल 1848	जन्मदिवस	अदभुत चित्रकार : राजा रवि वर्मा
30 अप्रैल 1870	जन्मदिवस	भारतीय फिल्मों के पितामह : दादासाहब फाल्के
30 अप्रैल 1837	बलिदान दिवस	अदभुत योद्धा : हरिसिंह नलवा

अनंत लक्ष्मण कन्हेरे — जन्म- 1891, मृत्यु- 19 अप्रैल, 1910

अनंत लक्ष्मण कन्हेरे का जन्म इंदौर, मध्य प्रदेश में हुआ। उनके पूर्वज महाराष्ट्र के रत्नागिरी ज़िले के निवासी थे। वे भारत के युवा क्रांतिकारियों में से एक थे। उन्हें देश की आज़ादी के लिए शहीद होने वाले युवाओं में गिना जाता है।

क्रांतिकारी जीवन : उस समय भारत की राजनीति में दो विचारधाराएँ स्पष्ट रूप से उभर रही थीं। एक ओर कांग्रेस अपने प्रस्तावों के द्वारा भारतवासियों के लिए अधिक से अधिक अधिकारों की मांग कर रही थी और

अंग्रेज़ सरकार इन मांगों की उपेक्षा करती जाती थी। दूसरी ओर क्रान्तिकारी विचारों के युवक थे, जो मानते थे कि सशस्त्र विद्रोह के ज़रिये ही अंग्रेज़ों की सत्ता उखाड़ी जा सकती है। जब हिन्दू और मुस्लिमों में मतभेद पैदा करने के लिए सरकार ने 1905 में 'बंगाल का विभाजन' कर दिया तो क्रान्तिकारी आन्दोलन को इससे और भी बल मिला। महाराष्ट्र में 'अभिनव भारत' नाम का युवकों का संगठन बना और वे अखाड़ों के माध्यम से क्रान्ति की भावना फैलाने लगे। विनायक सावरकर और गणेश सावरकर इस संगठन के प्रमुख व्यक्ति थे। अनन्त लक्ष्मण कन्हेरे भी इस मंडली में सम्मिलित हो गये।

अंग्रेज़ जैक्सन की हत्या : वर्ष 1909 में विदेशी सरकार के विरुद्ध सामग्री प्रकाशित करने के अभियोग में जब गणेश सावरकर को आजन्म कारावास की सज़ा हो गई तो क्रान्तिकारी और भी उत्तेजित हो उठे। उन्होंने नासिक के ज़िला अधिकारी जैक्सन का वध करके इसका बदला लेने का निश्चय कर लिया। 21 दिसम्बर, 1909 को जब जैक्सन एक मराठी नाटक देखने के लिए आ रहा था, तभी कन्हेरे ने नाट्य-गृह के द्वार पर ही उसे अपनी गोली का निशाना बनाकर ढेर कर दिया।

शहादत : जैक्सन की हत्या के बाद अंग्रेज़ पुलिस ने कई स्थानों पर छापेमारी की। अनेक गिरफ्तारियाँ हुईं और मुकदमे चले। जैक्सन की हत्या के मामले में अनंत लक्ष्मण कन्हेरे, धोंडो केशव कर्वे और विनायक देशपाण्डे को फ़ांसी की सज़ा हुई। अनंत लक्ष्मण कन्हेरे को 19 अप्रैल, 1910 को केवल 19 वर्ष की उम्र में फ़ांसी पर लटका दिया गया। इतनी छोटी-सी आयु में ही शहीद होकर भारत माँ के इस लाल ने भारतीय इतिहास में अपना नाम अमर कर लिया।

सरदार हरि सिंह नलवा (जन्म : 1791 - बलिदान : 30 अप्रैल 1837)

सरदार हरि सिंह नलवा, महाराजा रणजीत सिंह के सेनाध्यक्ष थे। उन्होंने पठानों के विरुद्ध किये गये कई युद्धों का नेतृत्व किया। रणनीति और रणकौशल की दृष्टि से हरि सिंह नलवा की तुलना भारत के श्रेष्ठ सेनानायकों से की जा सकती है। उन्होंने सिख साम्राज्य की सीमा को सिन्धु नदी के परे ले जाकर खैबर दर्रे के मुहाने तक पहुँचा दिया था। हरि सिंह नलवा ने कश्मीर और काबुल पर जीत दर्ज की। इतिहास में पहली बार हुआ था कि पेशावरी पश्तून, पंजाबियों द्वारा शासित थे।

जंगल में बाघ से सामना : महाराजा रणजीत सिंह के साथ जंगल में शिकार खेलते समय एक विशाल आकार के बाघ ने उन पर हमला कर दिया। हरी सिंह ने बाघ के जबड़ों को अपने दोनों हाथों से पकड़ कर उसके मुंह को बीच में से चीर डाला। उनकी इस बहादुरी को देख कर रणजीत सिंह ने कहा 'तुम तो राजा नल जैसे वीर हो', तभी से वो 'नलवा' के नाम से प्रसिद्ध हो गये।

महाराजा रणजीत सिंह के निर्देश के अनुसार हरि सिंह नलवा ने सिख साम्राज्य की भौगोलिक सीमाओं को पंजाब से लेकर काबुल बादशाहत के बीचोंबीच तक विस्तार किया था। महाराजा रणजीत सिंह के सिख शासन के दौरान 1807 ई. से लेकर 1837 ई. तक हरि सिंह नलवा लगातार अफगानों के खिलाफ लड़े। अफगानों के खिलाफ जटिल लड़ाई जीतकर नलवा ने कसूर, मुल्तान, कश्मीर और पेशावर में सिख शासन की व्यवस्था की थी।

सर हेनरी ग्रिफिन ने हरि सिंह को "खालसाजी का चैंपियन" कहा है। ब्रिटिश शासकों ने हरि सिंह नलवा की तुलना नेपोलियन से भी की है। इन्हें "शेर ए पंजाब" भी कहा जाता है।

ख़ैबर दर्रा पश्चिम से भारत में प्रवेश करने का एक महत्वपूर्ण मार्ग है। ख़ैबर दर्रे से होकर ही 500 ईसा पूर्व में यूनानियों के भारत पर आक्रमण करने और लूटपात करने की प्रक्रिया शुरू हुई। इसी दर्रे से होकर यूनानी, हूण, शक, अरब, तुर्क, पठान और मुगल लगभग एक हजार वर्ष तक भारत पर आक्रमण करते रहे। हरि सिंह नलवा ने ख़ैबर दर्रे का मार्ग बंद करके इस ऐतिहासिक अपमानजनक प्रक्रिया का पूर्ण रूप से अन्त कर दिया था।

हरि सिंह ने अफगानों को पछाड़ कर निम्नलिखित विजयों में भाग लिया: सियालकोट (1802), कसूर (1807), मुल्तान (1818), कश्मीर (1819), पखली और दमतौर (1821-22), पेशावर (1834) और ख़ैबर हिल्स में जमरौद (1836)। हरि सिंह नलवा कश्मीर और पेशावर के गवर्नर बनाये गये। कश्मीर में उन्होंने एक नया सिक्का ढाला जो 'हरि सिंगी' के नाम से जाना गया। यह सिक्का आज भी संग्रहालयों में प्रदर्शित है।

वीरगति : 1837 में जब महाराजा रणजीत सिंह अपने बेटे के विवाह में व्यस्त थे तब सरदार हरि सिंह नलवा उत्तर पश्चिम सीमा की रक्षा कर रहे थे। ऐसा कहा जाता है कि नलवा ने राजा रणजीत सिंह से जमरौद के किले की ओर बढ़ी सेना भेजने की माँग की थी लेकिन एक महीने तक मदद के लिए कोई सेना नहीं पहुँची। सरदार हरि सिंह अपने मुठ्ठी भर सैनिकों के साथ वीरतापूर्वक लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। 1892 में पेशावर के एक हिन्दू बाबू गज्जू मल्ल कपूर ने उनकी स्मृति में किले के अन्दर एक स्मारक बनवाया।

सर गंगाराम — अप्रैल 1851-जुलाई 10, 1927

राय बहादुर सर गंगाराम अग्रवाल अविभाजित भारत के एक प्रसिद्ध सिविल इंजिनियर, उद्यमी और साहित्यकार थे। लाहौर के शहरी तानेबाने में उनके व्यापक योगदान को देखते हुए खालिद अहमद ने उन्हें "आधुनिक लाहौर का जनक" कहा था।

गंगा राम का जन्म सन 1851 में अविभाजित भारत के पंजाब प्रांत के ननकाना साहिब जिले के मंगताँवाला गांव में हुआ था। 1871 में उन्होंने रूड़की के थॉमसन सिविल इंजीनियरिंग कॉलेज (अब आई आई टी रूड़की) से छात्रवृत्ति प्राप्त करते हुए अपनी शिक्षा पूरी की। उन्होंने 1873 में स्वर्ण पदक के साथ अंतिम निचली अधीनस्थ परीक्षा उत्तीर्ण की। उन्हें सहायक अभियंता नियुक्त किया गया और शाही असेंबली के निर्माण में मदद के लिए दिल्ली बुलाया गया। लाहौर संग्रहालय भवन सर गंगा राम द्वारा समेकित इंडो-सरसेनिक रिवाइवल वास्तुशिल्प शैली में डिजाइन किया गया था।

1873 में, पंजाब पीडब्ल्यूडी में एक संक्षिप्त सेवा के बाद उन्होंने खुद को व्यावहारिक खेती के लिए समर्पित किया। उन्होंने मोंटगोमेरी जिले में 50,000 एकड़ (200 वर्ग किमी) बंजर को तीन वर्षों के भीतर मुस्कुराते हुए खेतों में परिवर्तित कर दिया। एक जलविद्युत संयंत्र द्वारा उठाए गए पानी से सिंचित और एक हजार मील सिंचाई चैनलों के माध्यम से सिंचित यह देश में अपनी तरह का सबसे बड़ा निजी उद्यम था। सर गंगा राम ने अर्जित किया गया धन दान कर दिया। वह एक महान इंजीनियर और महान परोपकारी थे। सर गंगा राम अस्पताल, नई दिल्ली 1951 में उनकी याद में बनाया गया था।

विश्राम सदनों में मार्च-2023 में आने वाले नए रोगी व सहायक

क्र.स.	राज्य/देश	माधव सेवा आश्रम, लखनऊ	KGMU, लखनऊ	विश्राम सदन, दिल्ली	IGIMS, पटना	एम्स, झज्जर	योग
1	जम्मू कश्मीर			9		6	15
2	हिमाचल प्रदेश			7		6	13
3	पंजाब					7	7
4	हरियाणा			11		350	361
5	दिल्ली	8	3	8	2	143	164
6	उत्तराखंड			12		35	47
7	उत्तर प्रदेश	1743	1009	116		492	3360
8	बिहार	1017	46	112	2217	120	3512
9	झारखण्ड	103		11	17	18	149
10	सिक्किम					2	2
11	नागालैंड						0
12	असम	2				3	5
13	मणिपुर /मिजोरम			4			4
14	अरुणाचल प्रदेश	7					7
15	त्रिपुरा			2			2
16	मेघालय						0
17	प. बंगाल	30		39	5	7	81
18	ओडिशा/अंदमान	10				2	12
19	आंध्रप्रदेश/तेलंगाना			5			5
20	तमिलनाडु /पुदुच्चेरी						0
21	कर्नाटक						0
22	केरल						0
23	महाराष्ट्र /गोवा	11	5		2		18
24	मध्य प्रदेश	91	1	61		42	195
25	छत्तीसगढ़	22				1	23
26	गुजरात			3			3
27	राजस्थान	2	1	8		27	38
28	अन्य						
	पड़ोसी देश						
29	नेपाल	3	3	10	16	6	38
30	बांग्लादेश						
31	अन्य देश						
		3049	**1068**	**418**	**2259**	**1267**	**8061**
	योग (अप्रैल 22 - मार्च 23)	**35844**	**10907**	**7563**	**25065**	**10264**	**89643**

RNIN-UPHIN/2005/15853

स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प - लखनऊ

लखनऊ और उसके आस पास दी जाने वाली चिकित्सा सेवाओं का विवरण

सेवा बस्ती में स्वास्थ्य केंद्र	मार्च	अप्रैल 22 से
वेदांत आश्रम पपनामऊ चिनहट	0	196
सेवा समर्पण संस्थान, बिन्दौवा	107	1614
गोपालपुरा	24	255
51 शक्तिपीठ, बक्शी का तालाब	35	476
अम्बेडकर नगर	15	358
माधव सेवा आश्रम	18	165
माधवराव देवड़े स्मृति रूग्ण सेवा केंद्र		
एलोपेथिक	491	6505
होम्योपैथिक	304	3889
रूग्ण सेवा केंद्र, माधव सेवा आश्रम	260	2725
कुल लाभान्वित रोगी	**1254**	**16183**

नेत्र चिकित्सा (मार्च)

	देवड़े नेत्र चिकित्सालय लखनऊ	अशोक सिंघल नेत्र चिकित्सा संस्थान, अयोध्या	योग (अप्रैल 2022 से)
नेत्र परीक्षण	607	2371	31182
चश्मा वितरण	320	1848	21437
मोतियाबिंद ऑपरेशन	24	0	191
Fundus Test	0	0	173
OCT Test	0	0	18
पैथोलॉजी	0	0	1944

आलोक : नेत्र एवं पैथोलॉजी जाँच केवल 20 रूपये के पंजीकरण शुल्क में उपलब्ध है

आप भी लिखें :- सेवा संवाद के आप सुधी पाठक हैं, आपके विचार, सुझाव हमारे लिए सदैव प्रेरणादायी रहे हैं। सेवा सम्बन्धी आलेख (चित्र सहित), सेवा के प्रेरक प्रसंग, सेवा कार्य के उल्लेखनीय व्यक्तित्व, सेवा संस्थानों का परिचय एवं उनके कार्य, सेवा को प्रोत्साहित करने वाली घटनाएं, सुझाव आदि सामग्री तथा सेवा संवाद के प्रकाशित अंकों पर आप अपनी प्रतिक्रिया प्रेषित कर हमारा मार्गदर्शन व सहयोग करने का कष्ट करें- सम्पादक।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास के प्रकल्प

प्रकल्प का नाम	संपर्क सूत्र	दूरभाष
स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प, लखनऊ	श्री ओ.पी. श्रीवास्तव	9839785395
माधव सेवा आश्रम, लखनऊ	श्री शरद जैन	9670077777
महामना शिक्षण संस्थान, लखनऊ	श्री रंजीव तिवारी	9731525522
महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प, लखनऊ	श्रीमती अनिमा जम्वाल	9839582266
सामाजिक विज्ञानं एवं प्रशिक्षण संस्थान, लखनऊ	डॉ हरमेश चौहान	9450930087
विश्राम सदन, के.जी.एम.यू. , लखनऊ	श्री जितेन्द्र अग्रवाल	9415003111
देवडे नेत्र चिकित्सालय, लखनऊ	श्री राजेश	9793120738
अशोक सिंघल नेत्र चिकित्सा संस्थान, अयोध्या	डॉ सुशील उपाध्याय	9554966006
सेवा संवाद (मासिक), लखनऊ	डॉ शिवभूषण त्रिपाठी	9451176775
सेवा चेतना (अर्धवार्षिक), लखनऊ	डॉ विजय कर्ण	8887671004
विश्राम सदन, एम्स , दिल्ली	श्री राजीव गुगलानी	9810262200
अक्षय सेवा, दिल्ली	श्री रामअवतार किला	9811052464
समर्थ भारत, दिल्ली	श्री शोनाल गुप्ता	9811190016
भारतीय संस्कृति अध्ययन केन्द्र, दिल्ली	श्री गौरव गर्ग	9918532007
विश्राम सदन, आई. जी. आई. एम. एस., पटना	श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह	9431114457
विश्राम सदन, एम्स, झज्जर (हरियाणा)	श्री विकास कपूर	9818098600
माधव सेवा विश्राम सदन , ऋषिकेश	श्री संजय गर्ग	9837042952

बुक पोस्ट
छपा-साहित्य

सेवा में,

मुद्रक एवं प्रकाशक : श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल द्वारा भाऊराव देवरस सेवा न्यास सी-91, निराला नगर, लखनऊ-226020 के लिए नूतन ऑफसेट मुद्रण केंद्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ-226002 से मुद्रित, भाऊराव देवरस सेवा न्यास, सी-91, निराला नगर, लखनऊ-262020 से प्रकाशित - सम्पादक : डॉ शिवभूषण त्रिपाठी